بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in Khulasa Khutba-22.04.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

इंसान की सम्पूर्ण आध्यात्मिक सुन्दरता तक़्वा की समस्त राहों पर क़दम मारना है। तक़्वा के सूक्ष्म मार्ग आध्यात्मिक सुन्दरता के सूक्ष्म चिन्ह तथा लुभावनी रूप रेखाएँ हैं।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 22 अप्रैल 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشۡهَدُ أَنۡ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ وَأَشۡهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ

اَمّا بعد فاعوذ باللّٰہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आजकल हम रमज़ान के महीने से गुज़र रहे हैं तथा लगभग दो दशक पूरे हो गए, अल्लाह तआला की कृपा से हर मोमिन इस महीने में यह कोशिश करता है कि वह अधिक से अधिक इस महीने के फ़ैज़ से अंश प्राप्त करे।

अल्लाह तआला ने रोज़ों के अनिवार्य होने के आदेश पर आरम्भ में ही रोज़े का यह उद्देश्य बयान फ़रमाया है कि रोज़े तुम पर इस लिए फ़र्ज़ किए गए हैं ताकि तुम तक़्वा (संयम, ईशपरायणता) धारण करो। अतः रोज़ों तथा रमज़ान के फ़ैज़ से हम तभी हिस्सा पा सकेंगे जब हम रोज़ों के साथ अपने तक़्वा के स्तर भी बुलन्द करने वाले होंगे, हर प्रकार की बुराईयों से बचने के लिए अल्लाह तआला की शरण में आने का प्रयत्न करेंगे।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा ढाल है, क्या केवल नाम का रोज़ा रखना ही हमारे लिए पर्याप्त है? सहरी तथा अफ़तारी करना ही काफ़ी है? क्या हमारा इतना काम ही हमें रोज़े की ढाल की पीछे ले आएगा कि हमने सहरी और अफ़तारी कर ली? नहीं, बल्कि इसके सहयोगी कर्मों को भी देखना होगा तथा मूल आधार जो अल्लाह तआला ने बताया है, जैसा कि मैंने कहा कि वह यह है कि- لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُوۡنَ ताकि तुम तक़्वा धारण करो। अतः यदि हमने अपने रोज़ों को, अपने रमज़ान को वे रोज़े तथा रमज़ान बनाना है जो अल्लाह तआला के लिए हो, अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए हो, जिसका बदला स्वयं अल्लाह तआला बनता हो तो हम फिर इसे उस स्तर पर लाना होगा जो ख़ुदा तआला हमसे चाहता है।

हम अपने आपको मोमिन कहते हैं, मुसलमान कहते हैं, यह दावा करते हैं कि हमने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशानुसार काम करते हुए आप स. पर अपने ईमान को सुदृढ़ करते हुए इस बात को भी माना है कि आप स. की भविष्य वाणी के अनुसार जिस मसीह व मेहदी ने आना था वह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम के रूप में आ चुका है तथा अब दीने इस्लाम के पुर्नोत्थान का काम अल्लाह तआला के वादे के अनुसार इस मसीह व मेहदी के हाथ से ही होना है। अतः हमारा कर्त्तव्य है कि अपने अन्दर इस्लाम की वास्तविक आत्मा को स्थापित रखने के लिए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से ही मार्ग दर्शन प्राप्त करें।

अतः जब हम देखते हैं कि तक़्वा के सम्बंध में आप अलै. क्या उपदेश देते हैं तो इस विषय से भी हमें ज्ञात होता है कि तक़्वा क्या है? जैसा कि मैंने कहा, हम यह दावा करते हैं कि हम मुसलमान हैं और हम ईमान लाने वालों में शामिल हैं तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- तो फिर सुनो कि ईमान का प्रथम चरण यह है कि इंसान तक़्वा धारण करे।

और फिर फ़रमाया कि तक़्वा क्या है? तो इसका जवाब यह है कि हर प्रकार की बदी से अपने आपका बचाना। अब यदि हम निरीक्षण करें तो यह कोई छोटी बात नहीं, हमें आत्मनिरीक्षण से ही पता चल जाएगा कि क्या हम तक़्वा का हक़ अदा करते हुए अल्लाह के हक़ को अदा कर रहे हैं, क्या हम तक़्वा पर चलते हुए अल्लाह तआला के प्राणियों का हक़ अदा कर रहे हैं। आप अलै. ने फ़रमाया- यह बात कि तक़्वा क्या है उस समय तक पता नहीं चल सकती जब तक इन बातों का पूर्ण ज्ञान न हो, विद्या प्राप्त करना अनिवार्य है क्यूँकि विद्या के बिना कोई चीज़ मिल ही नहीं सकती, उसको आदमी पा ही नहीं सकता।

आप अलै. ने फ़रमाया- यह ज्ञान प्राप्त करने के लिए कि अल्लाह तआला के हक़ क्या हैं, क्या बन्दों के हक़ हैं, किन बातों से अल्लाह ने रोका है, किन बातों के करने के लिए अल्लाह तआला ने आदेश दिया है, इसके लिए बार बार क़ुर्आन शरीफ़ को पढ़ो। फ़रमाया- और तुम्हें चाहिए कि बुरे कामों का विवरण लिखते जाओ जब क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ रहे हो और फिर ख़ुदा तआला की कृपा तथा समर्थन से कोशिश करो कि इन बदियों से बचते रहो।

अतः इस रमज़ान में हम क़ुआन शरीफ़ भी पढ़ रहे हैं तथा साधारणतः क़ुर्आन करीम पढ़ने की ओर अधिक ध्यान होता है तो इस सोच के साथ पढ़ना चाहिए कि इसके आदेशों तथा निषेधों पर हमने विचार करना है तथा बुरे कामों से रुकना है तथा सद्कर्मों करने की कोशिश करनी है। आप अलै. ने फ़रमाया- क़ुर्आन शरीफ़ में आरम्भ से अंत तक ख़दा तआला के आदेश तथा निषेध सविस्तार मौजूद हैं।

आप अलै. ने इस बात को बड़े ज़ोर से बयान फ़रमाया कि जब तक इंसान मुत्तक़ी नहीं बनता उसकी इबादतों तथा दुआओं में क़बूलियत का रंग पैदा नहीं होता क्यूँकि अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है कि- إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ (सूरः मायदा-28) अर्थात निःसन्देह अल्लाह तआला मुत्तक़ियों ही की इबादत को क़बूल फ़रमाता है। फ़रमाया- यह सच्ची बात है कि नमाज़, रोज़ा भी मुत्तक़ियों का ही क़बूल होता है।

इबादतों की क़बूलियत तथा इसका क्या अभिप्रायः है? तो इसका उत्तर यह है कि जब हम यह कहते हैं कि नमाज़ क़बूल हो गई है तो इसका अभिप्रायः यह होता है कि नमाज़ के प्रभाव तथा बरकतें नमाज़ पढ़ने वाले में पैदा हो गए हैं। जब तक वे बरकतें तथा प्रभाव पैदा न हों, फ़रमाया- उस समय तक केवल टक्करें

ही हैं। अतः हमें देखना होगा कि क्या हमारा रमज़ान, हमारे रोज़े हमें इस स्तर तक ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। फ़रमाया- अतः पहला चरण तथा कठिनाई उस इंसान के लिए जो मोमिन बनना चाहता है, यही है कि बुरे कामों से बचे, तथा इसी का नाम तक़्वा है।

अतः यदि हमारी इबादतों, हमारे रोज़ों, हमारे क़ुर्आन करीम पढ़ने ने, यदि हममें क्रियात्मक बदलाव पैदा नहीं किए तथा तक़्वा, जिसको प्राप्त करना रोज़ों का उद्देश्य है, वह प्राप्त करने का प्रयास नहीं किया तो हमने अपने रोज़ों के यथार्थ को पूरा नहीं किया। हमने उस ढाल के बारे में बातें तो की हैं जिसके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ा ढाल है, परन्तु हमने उस ढाल के उपयोग के तरीक़े को सीखने का प्रयत्न नहीं किया, हमने सहरी एवं अफ़तारी की व्यवस्था तो की परन्तु हमने सहरी और अफ़तारी खाने के उद्देश्य को पूरा नहीं किया, हमने पूरा दिन बिन खाए पिए व्यतीत तो कर दिया किन्तु हमने उस उपवास के उद्देश्य को पूरा नहीं किया जो उद्देश्य तक़्वा से पूरा होता है तथा जो तक़्वा हममें पैदा होना चाहिए था। अतः हमें ये निरीक्षण करने होंगे कि हुआ या नहीं।

आगे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ अन्य उद्धरण भी तक़्वा के बारे में पेश फ़रमाए जिनसे हमारा मार्ग दर्शन होता है कि वास्तविक तक़्वा क्या है तथा किस प्रकार का तक़्वा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हममें पैदा करना चाहते हैं।

वास्तविक तक़्वा जिससे इंसान धोया जाता है और साफ़ होता है तथा जिसके लिए नबी आते हैं वह दुनिया से उठ गया है। कोई होगा जो- قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا का सत्यापन करने वाला होगा, अर्थात जिसने इसको पाक किया वह अपना लक्ष्य पा गया, पवित्रता तथा शुद्धता उत्तम चीज़ है, इंसान पाक तथा शुद्ध हा तो फ़रिश्ते उससे हाथ मिलाते हैं।

लोगों में इसका महत्त्व नहीं अन्यथा उनके आनन्द की हर एक चीज़ उनको हलाल साधनों से मिले। चोर चोरी करता है कि माल मिले किन्तु यदि वह धैर्य से काम ले तो ख़ुदा तआला उसे अन्य मार्ग से धनी कर देगा तथा यह केवल चोरी प्रत्यक्ष चोरी नहीं है, कुछ व्यापारी लोग भी जो अनुचित प्रकार की चीज़ें अपनी बेचते हैं, वे भी इसी परिधि में आती हैं। ईमान जब इंसान के दिल से निकल जाता है तो उसी समय इस प्रकार की हरकतें होती हैं।

फ़रमाया जैसे बकरी के सिर पर शेर खड़ा हो तो वह घास भी नहीं खा सकती, तो बकरी जितना ईमान भी लोगों का नहीं है। गुनाहों तथा बुराईयों को जब इंसान करता है तो उस समय यह आभास होना चाहिए कि ख़ुदा तआला हमें हर समय देख रहा है। फ़रमाया कि वास्तविक जड़ तथा उद्देश्य तक़्वा है, जिसे वह मिल गया तो सब कुछ पा सकता है, इसके बिना सम्भव नहीं है कि इंसान छोटे गुनाहों से तथा बड़े पापों से बचे।

तक़्वा से हर चीज़ है- क़ुर्आन ने आरम्भ इसी से किया है- إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ का अभिप्रायः भी तक़्वा है कि इंसान यद्यपि अमल करता है किन्तु भय के कारण साहस नहीं करता कि उसे अपनी ओर जोड़ कर बताए और अल्लाह से सहायता मांगता है। फिर दूसरो अवस्था भी- هُدًى لِلْمُتَّقِينَ से आरम्भ होती है। नमाज़, रोज़ा, ज़कात इत्यादि सब उसी समय क़बूल होते हैं जब इंसान मुत्तक़ी हो, उस समय पाप की ओर बुलाने वाली समस्त चीज़ें जो हैं उनको अल्लाह तआला दूर कर देता है यदि तक़्वा हो,

पतनी की आवश्यकता हो तो पतनी देता है, दवा की आवश्यकता हो तो दवा देता है, जिस चीज़ की आवश्यकता हो वह दे देता है तथा ऐसे साधनों से जीविका देता है कि उसे ख़बर नहीं होती।

फिर फ़रमाते हैं- इस नियम को सदैव याद रखो कि मोमिन का काम यह है कि वह किसी सफलता पर जो उसे दी जाती है, लज्जित होता है कि मैं तो इस योग्य नहीं था अल्लाह तआला के फ़ज़्ल ने ही सब कुछ दे दिया, और जब यह भावना पैदा होती है तो फिर ख़ुदा तआला की स्तुति करता है तथा इस प्रकार से वह क़दम आगे रखता है तथा हर एक परीक्षा में दृढ़ संकल्प रह कर ईमान पाता है। फ़रमाया- वास्तविक मोमिन हर चीज़ को जब अल्लाह तआला से ही जोड़ता है तो फिर उसके ऊपर अनुकम्पाओं का एक द्वार खुलता चला जाता है तथा इसी प्रकार हर एक सफलता के बाद उसका ख़ुदा से एक नया मामला शुरु हो जाता है तथा उसमें बदलाव आने लगता है।إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ख़ुदा उनके साथ होता है जो मुत्तक़ी होते हैं।

फ़रमाया- तक़्वा का प्रभाव इसी संसार से मुत्तक़ी पर होना शुरु हो जाता है, यह केवल उधार नहीं नक़द है बल्कि जिस प्रकार विष का प्रभाव तथा विष की काट का प्रभाव शरीर पर तुरन्त होता है, उसी प्रकार तक़्वा का प्रभाव भी होता है। अतः यदि नेक काम करने, इबादत करने, सत्कर्म करने के बावजूद इंसान की हालत पर प्रभाव नहीं पड़ रहा तो यह चिंता जनक बात है।

आप अलै. फ़रमाते हैं- जब तक वास्तविक रूप में इंसान पर अनेक मौतें न आ जाएँ, वह मुत्तक़ी नहीं बनता----हर ओर से आँखें बन्द करके पहले तक़्वा के स्तर तय करो, जितने नबी अलै. आए सबका उद्देश्य यही था कि तक़्वा के मार्ग सिखलाएँ- إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ (सूरः अनफ़ाल-35) किन्तु क़ुर्आन शरीफ़ ने तक़्वा की सूक्ष्म राहों को सिखलाया है----संक्षिप्त सारांश हमारी शिक्षा का यही है कि इंसान अपनी समस्त शक्तियों को ख़ुदा की ओर लगा दे।

द्वित्तीय ख़ुत्बः से पहले हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने इरशाद फ़रमाया-

विभिन्न दृष्टि कोणों से जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें उपदेश दिए हैं, वे कुछ हवाले मैंने पेश किए हैं ताकि हमें तक़्वा के अर्थ तथा उसकी गहराई का भी ज्ञान हो तथा हम, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है, आप अलै. की जमाअत में शामिल होकर तक़्वा की वास्तविता को समझते हुए उस पर चलने वाले भी हों। रमज़ान के इन शेष दिनों में जितना सम्भव हो हमें कोशिश करनी चाहिए कि तक़्वा की वास्तविकता को समझते हुए अल्लाह तथा उसके बन्दों के हक़ अदा करने वाले बनें, अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131